CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी सारस्वत
सहायक प्रोफेसर (शिक्षा)
एस.एस. जैन सुबोध महाविद्यालय, जयपुर
Email: saraswatmeenakshi2104@gmail.com

सारांश

किशोरावस्था के विद्यार्थियों में समायोजन एक प्रक्रिया है जिससे वह अपनी जीवन शैली और शैक्षणिक प्रक्रियाओं में सामजस्य स्थापित करता है। माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना शोध का प्रमुख उद्देश्य था। शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों को बीकानेर संभाग के चारो जिलों से सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों को सर्वेक्षण विधि हेतु न्यादर्श के रूप में चयन किया। प्रदत्तों के संकलन में ए.के.पी. सिंह और आर.पी सिंह द्वारा निर्मित विद्यालय विद्यार्थियों के लिए समायोजन मापनी का प्रयोग किया। परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मान व्हिटनी परीक्षण प्रयुक्त किया गया। मुख्य निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन और समग्र समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दावली : संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन और सामजस्य आदि।

प्रस्तावना

विद्यार्थियों के जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सामाजिक आदर्शों एवं मान्यताओं के अनुरूप सांवेगिक रूप से मान्य व्यवहार को बनाए रखता है। इसके द्वारा वह अपने लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त कर सकता है। इस हेतु उससे अपनी परिस्थितियों से सामजस्य करना पड़ता है। यह सामजस्य ही विद्यार्थियों को उत्तम समायोजन से आत्म-संतोष एवं सुख की प्राप्ति होती है। (Singh & Others, 2009) समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसमें मानसिक एवं व्यावहारिक दोनों ही प्रकार के प्रत्युत्तर निहित हैं। इनके द्वारा व्यक्ति अभाव, तनाव, भग्नाशा आदि को व्यक्त करता है तथा आंतरिक अंगों एवं बाह्य परिस्थितियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है। यह सामंजस्य ही समायोजन है। समयोजन विरोधी इच्छाओं के नियंत्रण में सहायता करता है तथा नैतिक आदर्शों के अनुसार आचरण करने प्रयास करता है। (Sharma & Kardwasra, 2007) सुसमायोजन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा हो। किसी प्रतिकूल मनोभौतिक परिस्थितियों में स्वयं को अनुकूलित करना समायोजन कहलाता है। यह समायोजन घर में माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ, समाज में मित्रों सगे संबंधियों के साथ जरूरी है तो विद्यालयों में शिक्षकों के साथ। गेट्स के अनुसार, ''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।'' (Verma & Srivastva, 2001) सभी प्रकार की आवश्यकताओं के साथ सामायोजन के द्वारा ही मनुष्य का सर्वागीण विकास संभव है। शिक्षा द्वारा समायोजन सरलता के साथ किया जा सकता है यही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। शिक्षा व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में मार्ग दिखाकर समायोजित करती हैं। समायोजन कोई स्थिर प्रक्रिया नहीं है कि एक बार समायोजित हो जाने से प्रक्रिया रूक जाती है। ऐसा कतई नहीं है यह एक गत्यात्मक प्रक्रिया है। समायोजन जीवन में परिवर्तन काप्रदर्शित करता है। समायोजन एवं सामजस्य दोनों एक ही शबदावली मानी जाती है। अक्रोफ (Arkoff, 1968)) ने समायोजन की परिभाषा में बताया कि ''विद्यार्थियों की उपलब्धि को किस प्रकार से प्रभावित करता है और उनके वैयक्तिगत विकास को किस प्रकार में अवरोध को दूर करता है।'' इस प्रकार विद्यार्थियों के समायोजन को कई प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं जैसे : आंकलन और उपलब्धि (Santrock, 2004) विद्यालय या महाविद्यालय का वातावरण (Holmbek & Wandrei, 1993) शैक्षिक समायोजन (Rice, 2009) सामाजिक समायोजन (Monroe, 2009) वैयक्तिगत-संवेगात्मक समायोजन (Law, 2007) समायोजन वह प्रकिया है जिसमें व्यक्ति अपने और पर्यावरण के साथ-साथ परिस्थितियों के बीच सामंजस्यपूर्ण संबध प्राप्त करने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। कुछ मनोवैज्ञानिक समायोजन को ऐसा व्यवहार बताते है जिसका उद्देश्य तनाव कम करना होता है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के समायोजन में भावात्मक समायोजन, विद्यालय समायोजन, कक्षाकक्ष समायोजन, सामाजिक समायोजन, वैयक्तिगत समायोजन आदि आयामों के माध्यम से समायोजन का मापन किया जाना है।

हमारा परिवेश बहुसंस्कृति, बहुजाति और बहु भाषायी हो गया है। जिससे समायोजन की समस्या तो ओर जटिल होती जा रही है। इसके साथ ही इस प्रतिस्पर्धा के दौर में बालकों के भविष्य एवं

आजिविका को लेकर चिंतित होना भी लाजमी है। इस प्रकार विद्यार्थियों के लिए जीवनचर्या में अनेकों प्रकार की समस्याओं एवं कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जीवित अवयव साधारण से जटिल अवस्था में निरन्तर समायोजन का प्रयास करता है। इस समायोजन का सम्बन्ध प्राणिशास्त्रीय आवश्यकताओं जैसे-भूख तथा प्यास की संतुष्टि से सम्बन्धित होता है अथवा मानवीय स्तर पर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे- सम्बन्ध स्थापना की इच्छा, प्रेम तथा वात्सल्य प्राप्त करने की इच्छा या रचनात्मक आत्म प्रदर्शन के अवसर प्राप्त करने की इच्छा पूर्ति से होता है। समायोजित व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं को पर्यावरण में इस प्रकार समायोजित करने का प्रयत्न करते हैं जिससे क्रियाओं के प्रतिदिन के कार्यक्रम सरलता से चल सकें।

प्रस्तुत शोध की प्रकृति एक सर्वेक्षणात्मक तुलनात्मक अध्ययन की है। इस प्रकार के शोध में दो समूहों के चरों का तुलनाः सरकारी एवं गैर-सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्याार्थियों समायोजन समस्या को देखते हुए शामिल किये गये हैं। शोध समस्या का परिसीमन करते हुए अपने शोध की समस्या को निम्न प्रकार से शीर्षक दिया है। **''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''** वर्तमान के प्रतिस्पर्धा वाले युग में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को समझना एक महत्वपूर्ण कार्य होगा।

अध्ययन उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन मध्यमानों में तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएँ

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन मध्यमानों श्रेणी में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रक्रिया

शोधकर्त्ता ने आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया है। **समष्टि एवं न्यादर्श :-** न्यादर्श में बीकानेर संभाग के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर एवं चूरू जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् 800 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप किया गया है। समायोजन अनुसूची विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए (2017) ए.के.पी. सिंह और आर.पी सिंह द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया है। मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु प्रदत्तों कके प्रसामान्यता एवं सजातीयता के परीक्षण तथा मान व्हिटनी परीक्षण से गणना की गई।

परिकल्पना सं. (a) माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के प्रदत्तों की प्रकृति प्रसामान्य वितरण की अवधारणा को पूर्ण नहीं करते हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण : माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों (N=798) के समायोजन के आयाम संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, और समायोजन का सम्पूर्ण योग के प्रदत्तों में प्रसामान्यता की अवधारणा हेतु प्रथम अवधारणा mean±σ= 99.72 % प्रदत्तों का वितरण होना आवश्यक होता है (Altman & Bland, 2005)। इस अवधारणा को प्रदत्तों का पूर्ण करता है। द्वितीय अवधारणा (i.e. Skew<|2.0| और kurtosis<|9.0|; (Schmider, Ziegler, Danay, Beyer, & Buhner, 2010) होती है। माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों (N=798) के समायोजन के आयाम संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, और समायोजन का सम्पूर्ण योग के प्रदत्तों में विषमता और कुकुदता को अवलोकन करने से स्पष्ट होता है। विषमता और कुकुदता की प्राप्त सांख्यिकी Skew<|2.0| और kurtosis<|9.0| पायी गयी है। एक सामान्य नियम के अनुसार विषमता और कुकुदता का निरपेक्ष मान उसकी मानक त्रुटि के 1.96 गुना से अधिक हो तो वितरण को प्रसामान्य नहीं माना जा सकता है (Field, 2013)। उक्त मान सभी अवधारणाओं को पूर्ण करता है। इसलिए उक्त शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के प्रदत्तों की प्रकृति प्रसामान्य वितरण की अवधारणा को पूर्ण नहीं करते हैं, को निरस्त किया जाता है। अर्थात् माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, और समायोजन का सम्पूर्ण योग के प्रदत्तों में प्रसामान्यता की अवधारण पूर्ण होती है। प्रदत्तों में प्रसामान्यता पाई गई है इस हेतु प्रसामान्य वितरण हेतु test of Normality : (Kolmogorov-Smirnov[a] and Shapiro-Wilk) की गई। (N=798> 50) इसलिए यहाँ केवल प्रसामान्य वितरण परीक्षण (Kolmogorov-Smirnov[a]) की सभी आयाम में सार्थकता मान (P-value 0.000 <0.05) असार्थक पाया गया है। (Steinskog et al., 2007) अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के सभी आयामों के प्रदत्तों में प्रसामान्य वितरण की अवधारणा की पूर्ति नहीं हैं, अस्वीकृत नहीं होती है। उक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है। कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों (N=798)के समायोजन के आयाम संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन के प्रदत्तों में प्रसामान्य वितरण नहीं पाया गया। परन्तु प्रसामान्य वितरण परीक्षण (Kolmogorov-Smirnov[a]) के समायोजन के सम्पूर्ण योग में सार्थकता मान (P-value 0.000 >0.05) सार्थक पाया गया है। (Steinskog et al., 2007) अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के सभी आयामों के प्रदत्तों में प्रसामान्य वितरण की अवधारणा की पूर्ति नहीं हैं, अस्वीकृत होती है। उक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है। कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के सम्पूर्ण योग के प्रदत्तों में प्रसामान्य वितरण पाया गया है। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की गणना हेतु टी-मान परीक्षण हेतु विचलन की सजातियता परीक्षण भी आवश्यक होता है।

परिकल्पना सं. (B) माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के प्रदत्तों की प्रकृति में सजातीयता विविधता की अवधारणा को पूर्ण नहीं करते हैं।

Test of Homogeneity of Variances

	Levene Statistic	df1	df2	Sig.
Emotional Adjustment	.042	1	796	.838
Social Adjustment	1.248	1	796	.264
Educational Adjustment	.196	1	796	.658
Sum of Adjustment	1.726	1	796	.189

उपरोक्त तालिका सं. में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों (N=798) के समायोजन के आयाम संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, और समायोजन का सम्पूर्ण योग के प्राप्तांकों में सजातीयता विविधता की अवधारणा (Levene test of Homogeneity of variances) (Bradley, 1978, 1980) की गणना की गई। माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के आयाम संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, और समायोजन का सम्पूर्ण योग के प्रदत्तों में क्रमशः (p-value with df=1, 796 : .838, .264, .658, & .189) प्रदत्तों में सजातीयता विविधता की अवधारणा सामूहिक रूप से पूर्ण होती है क्योंकि {p-value (sig.) >0.05, So H_0=rejected}। सामूहिक रूप में समायोजन के सभी पक्षों में सजातीय विविधता पाई गई। इसलिए दोनों समूहों में मध्यमानों में अन्तर सार्थकता हेतु टी-मान का प्रयोग किया जा सकता है। (Zimmerman & Zumbo, 1992)

परिकल्पना सं. (C) माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन मध्यमानों श्रेणी में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Table 2 :Adjustment of secondary school students Hypothesis testing by Mann-Whitney U test (Independent Samples)

Type of School		N	Mean Rank	Sum of Ranks	Mann-Whitney U	Z	Asymp. Sig. (2-tailed)	Effect Size
Emotional Adjustment	Govt.	399	409.42	163358.00	75643	-1.216	0.224	-0.043
	Private	399	389.58	155443.00				
Social Adjustment	Govt.	399	397.70	158682.00	78882	-0.221	0.825	-0.008
	Private	399	401.30	160119.00				
Educational Adjustment	Govt.	399	385.25	153715.50	73915.5	-1.747	0.081	-0.062
	Private	399	413.75	165085.50				

* p value is sig. at 0.05 level of confidence. b= r (0.15 is low, .30 is moderate .50 high effect of IV on DV) N=798

उपरोक्त तालिका सं.2 में सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के आयामः शैक्षिक समायोजन, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक समायोजन में प्रसम्भयव्ता मान (p-value : .224, .825, 0.081) दिया गया है। (Ruxton, 2006) सामान्य सिद्धान्त में शून्य परिकल्पना का परीक्षण में (p-value >0.05) होने से शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जा सकती है। इसलिए शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के आयामः शैक्षिक समायोजन, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक समायोजन में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं होती है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के आयाम : सामाजिक समायोजन और बौद्धिक समायोजन के प्रदत्तों के मध्यमान श्रेणी में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन पर किसी भी विद्यालय (सरकारी व गैर–सरकारी) अध्ययन करने से कोई प्रभाव नहीं होता है। क्योंकि समायोजन के सभी आयामों में प्रभाव गणना में कोई भी प्रभाव .15 से अधिक नहीं पाया गया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि किसी भी प्रकार के विद्यालयों में अध्ययन करने से विद्यार्थियों के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के आयाम : सामाजिक समायोजन और बौद्धिक समायोजन के प्रदत्तों के मध्यमान श्रेणी में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन पर किसी भी विद्यालय (सरकारी व गैर–सरकारी) अध्ययन करने से कोई प्रभाव नहीं होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Altman, D. G., & Bland, J. M. (2005). Standard deviations and standard errors. *BMJ (Clinical Research Ed.)*, *331*(7521), 903. https://doi.org/10.1136/bmj.331.7521.903
2. Bradley, J. V. (1978). Robustness? British Journal of Mathematical and Statistical Psychology, 31(2), 144–152.
3. Bradley, J. V. (1980). Nonrobustness in Z, t, and F tests at large sample sizes. *Bulletin of the Psychonomic Society*, *16*(5), 333–336. https://doi.org/10.3758/BF03329558
4. Field, A. (2013). *Discovering Statistics Using IBM SPSS Statistics (4th ed.). Sage Publications Ltd.*
5. *Ruxton, G. D. (2006). The unequal variance t-test is an underused alternative to Student's t-test and the Mann–Whitney U test. Behavioral Ecology, 17(4), 688–690. https://doi.org/10.1093/beheco/ark016*
6. *Steinskog, D. J., Tjøstheim, D. B., & Kvamstø, N. G. (2007). A Cautionary Note on the Use of the Kolmogorov–Smirnov Test for Normality. Monthly Weather Review, 135(3), 1151–1157. https://doi.org/10.1175/MWR3326.1*
7. *Zimmerman, D. W., & Zumbo, B. D. (1992). Parametric Alternatives to the Student T Test under Violation of Normality and Homogeneity of Variance. Perceptual and Motor Skills, 74*(3), 835–844. https://doi.org/10.2466/pms.1992.74.3.835